परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय. नरौरा (बुलन्दशहर)

कक्षा – 11

विषय–हिन्दी

वितान भाग–1

पाठ–2

'राजस्थान की रजत बूँदें'(1995)

लेखक–अनुपम मिश्र

मोड्यूल–1/1

प्रस्तुतकर्ता:–

नवीन कुमार भारंगर

पाठ का सारांश

- प्रस्तुत पाठ या लेख राजस्थान की रजत बूँदें लेखक अनुपम मिश्र जी के द्वारा लिखित है। इसमें लेखक के द्वारा राजस्थान की मरूसिल में पानी के स्त्रोत कुंई को वर्णित किया गया है, जिसका निर्माण राजस्थान में विशेषतः जल संरक्षण के लिए किया जाता है। कुंई की खुदाई और चिनाई करने वाले लोगों को चेलवांजी के नाम से जाना जाता है। लेखक अनुपम मिश्र जी कहते हैं कि चेलवांजी कुंई के भीतर काम कर रहे है, जो पसीने से तरबतर है। तीस–पैंतीस हाथ गहरी खुदाई हो चुकी है। अब भीतर में गर्मी बढ़ती ही जाएगी । कुंई का जो व्यास है, बह बहुत ही संकरा है जिसके लिए खुदाई का काम बसौली से किया जा रहा है। बसौली एक प्रकार की छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है। जो नुकीला फल होता है, वह लोहे का और जो हत्था होता है वह लकड़ी का कुंई की गहराई में गर्मी को कम करने के लिए ऊपर में खड़े लोग कुछ समयावधि में मुट्ठी भर रेत नीचे फेंकते रहते हैं, जिसके कारण ताजी हवा नीचे की और जाती है और गर्म हवा ऊपर की ओर लौटती है। ऊपर से फेंकी जाने वाली रेत से खुद को सुरक्षित रखने के लिए चेलवांजी अपने सिर पर कांसे, पीतल या अन्य किसी धातु का एक टोप रूपी बर्तन पहन लेते हैं।

- आगे लेखक कहते हैं कि चेलवांजी, जिसे चेजारो भी कहा जाता है, कुंई की खुदाई और एक विशेष तरह की चिनाई करने वाले दक्षतम लोग हैं। उनका यह काम 'चेजा' कहलाता है। जिस कुंई को चेजारो बना रहे हैं, वह एक छोटा सा कुआँ ही हैं। राजस्थान में अलग–अलग सीनों पर एक विशेष कारण से कुंईयों की गहराई कुछ कम–ज्यादा होती है। कुंआ भूजल को पाने के लिए बनता है, पर कुंई में वर्षा जल को संग्रहित किया जाता है। मरूभूमि में रेत का विस्तार और गहराई अथाह है। यहाँ पर कहीं–कहीं रेत के सतह के पचास–साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी भी मिलती है। कुऐं में पाया जाने वाला भूजल प्रायः खारा होने की वजह से पीने लायक नहीं होता है फलस्वरूप , ऐसे क्षेत्रों में कुंईयाँ बनाने की आवश्यकता होती है ।

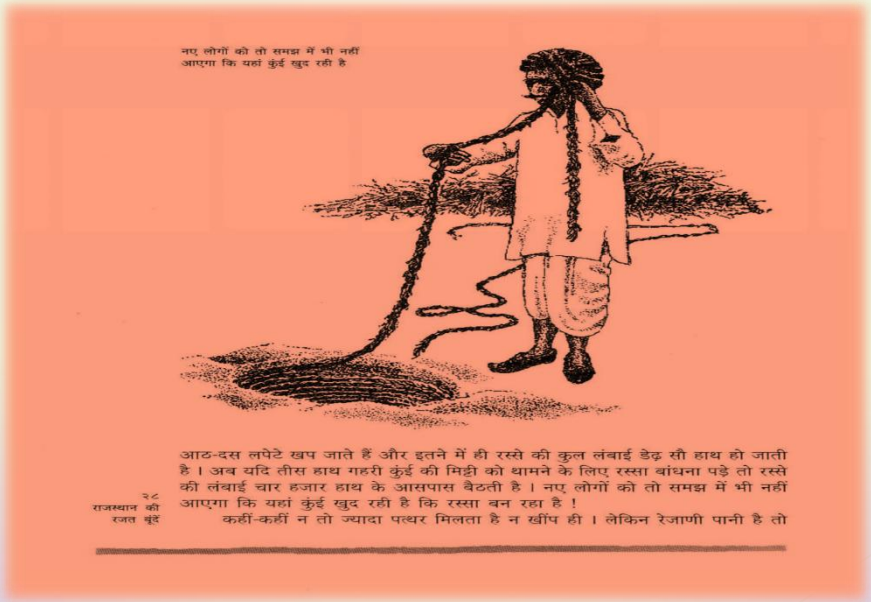

- जो खड़िया पट्टी होती हैं, वे वर्षा जल को गहरे खारे भूजल तक जाकर मिलने से रोकती हैं। ऐसी स्थिति में संबधित क्षेत्रों में बरसा पानी भूमि की रेतीली सतह और नीचे चल रही पथरीली पट्टी के बीच अटक कर नमी की तरह फैल जाता है। कुंई के निर्माण से रेत में विलीन नमी बूँदों में बदलकर धीरे–धीरे रिसती रहती है और कुंई में पानी जमा होने लगता है। परिणामस्वरूप, यह पानी खारे पानी के सागर में अमृत के समान मिठास लिए होता है।
- आगे लेखक कहते हैं कि इस अमृत को पाने के लिए मरूभूमि के समाज ने खूब मंथन किया है। अपने अनुभवों को व्यवहार में उतारने का पूरा एक शास्त्र विकसित किया है।इस शास्त्र ने समाज के लिए उपलब्ध पानी को तीन रूपों में बाँटा है। पहला रूप है 'पालरपानी' जो सीधे बरसात से मिलने वाला पानी है। यह धरातल पर बहता है और इसे नदी तालाब आदि में रोका जाता है। पानी का दूसरा रूप है 'पातालपानी' यह भूजल है जो कुओं में से निकाला जाता है।

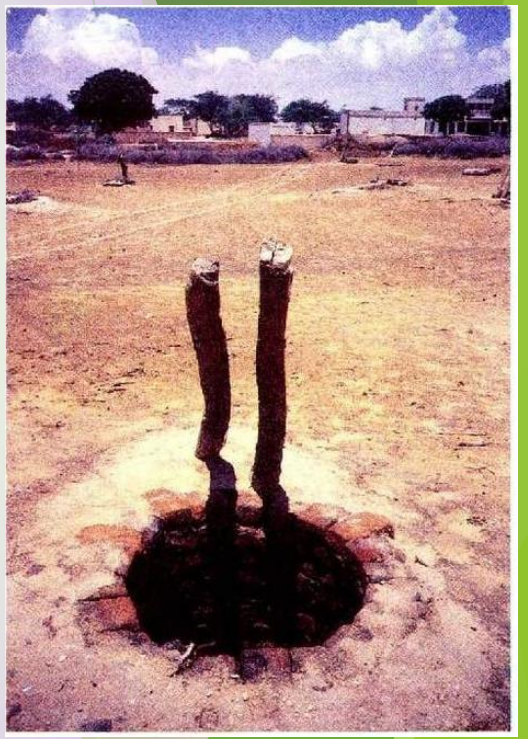

- पलरपानी और पातालपानी के मध्य पानी का तीसरा रूप 'रेजाणीपानी' कहलाता है। धरातल से नीचे उतरा लेकिन पाताल में न मिल पाया पानी की रेजाणी है। वर्षा की मात्रा नापने में भी इंच या सेंटीमीटर नहीं बल्कि 'रेजा' शब्द का उपयोग होता है। लेखक कहते हैं कि रेजाणीपानी खड़िया पट्टी के कारण पातालीपानी से अलग बनता है। इस के अभाव में ही रेजाणीपानी खारे पातालीपानी से मिलकर खारा हो जाता है। इसी रेजाणीपानी को समेटने के लिए कुंई का निर्माण होता है।
- आगे लेखक अनुपम मिश्र जी कहते हैं कि चेजो यानी चिनाई का श्रेष्ठतम काम कुंई का प्राण है। इसमें छोटी सी भी चूक चेजारो की जान ले सकती है । पहले दिन कुंई खोदने के साथ–साथ खींप (एक प्रकार की घास, जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है) के ढेर जमा कर लिया जाता है। चेजारो खुदाई शुरू करते हैं और बाकी लोग खींप की घास से कोई तीन अंगुला मोटा रस्सा बटने लगते हैं। पहले दिन काम पूरा होते–होते कुंई कोई दस हाथ गहरी हो जाती है। लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक ही कुंडली का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लम्बा रस्सा चाहिए। नए लोगों को तो समझ में भी नहीं आएगा कि यहाँ कुंई खुद रही है कि रस्सा बन रहा है। बीस–पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते–जाते गर्मी बढ़ती जाती है और हवा कम होने लगती है।

ऊपर से फेंकी जा रही रेत कुंई में काम कर रहे चेलवाजी को राहत दे जाती है। कभी–कभी कुंई बनाते समय ईंट की चिनाई में मिट्टी को रोकना संभव नहीं हो पाता। इसके लिए लकड़ी के लट्ठे नीचे से ऊपर की ओर एक दूसरे में फँसा कर सीधे खड़े किए जाते है। फिर इन्हें खींप या चग की रस्सी से बाँधा जाता है। यह बँधाई भी कुंडली का आकार ले लेती, इसलिए इसे 'साँपणी' भी कहते हैं। लेखक आगे कहते हैं कि कुंई की सफलता यानी सजलता उत्सव का अवसर बन जाती है। यहाँ की परंपरा के अनुसार कुंई का काम पूरा होने के बाद चेलवांजी का विशेष ध्यान रखने के लिए विशेष भोज का आयोजन किया जाता था। उन्हें विदाई के समय तरह–तरह के भेंट दिये जाते थे। गाँव के साथ चेजारो का संबध यहीं नहीं टूट जाता था, बल्कि समस्त तीज–त्योहारों, विवाह जैसे मंगल अवसरों पर नेग, भेंट उन्हें दी जाती थी। और फसल आने पर खलिहान में उनके नाम से अनाज का एक अलग ढेर भी लगा दिया जाता था। अब केवल मजदूरी देकर भी काम करवाने का रिवाज आ गया है।

आगे लेखक अनुपम मिश्र जी कहते हैं कि खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े भाग से गुजरती है। इसलिए उस पूरे हिस्से में एक के बाद एक कुंई बनती जाती है। निजी और सार्वजनिक सम्पत्ति का विभाजन करने वाली मोटी रेखा कुंई के मामले में बड़े विचित्र ढंग से मिट जाती है। प्रत्येक की अपनी–अपनी कुंई है

उसे बनाने और उससे पानी लेने का हक उसका अपना हक है। लेकिन कुंई जिस क्षेत्र में बनती है, वह गाँव समाज की सार्वजनिक भूमि है। उस जगह बरसने वाला पानी ही बाद में साल भर नमी की तरह सुरक्षित रहेगा और इसी नमी से वर्ष भर कुंईयों में पानी भरेगा। हर दिन सोने का अंडा देने वाली मुर्गी की चिरपरिचित कहानी को जमीन पर उतारती है कुंई। इससे दिन भर में बस दो–तीन घंटा मीठा पानी निकाला जा सकता है। रेत के नीचे सब जगह खड़िया की पट्टी का अस्तित्व न होने के कारण कुंई हर जगह नहीं मिलती है। चूरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर के कई क्षेत्रों में इस पट्टी को अस्तित्व है जिस कारण से वहाँ गाँव–गाँव में कुंईयाँ ही कुंईयाँ पायी जाती हैं। अलग–अलग जगहों पर खड़िया पट्टी के भी अलग–अलग नाम मिलते हैं। कहीं यह 'चारोली' हैं तो कहीं 'धाधड़ो' या 'धड़धड़ो', कहीं पर 'बिट्टू रो बिल्लियों' के नाम से भी जानी जाती हैं, तो कहीं पर इस पट्टी का नाम केवल 'खड़ी' भी है। अतः इसी खड़ी के बल

पर खारे पानी के बीच मीठा पानी देती रहती है। कुंई.....!!

पाठ का शब्दार्थ

- तरबतर – अधिक भीगा हुआ (खून या पसीने से)
- कुल्हाड़ी – भूमि की खुदाई करने का एक औजार
- फावड़ा – भूमि की खुदाई करने का एक औजार
- विचित्र – अजीब
- पेचीदा – उलझा हुआ
- मरूभूमि – मरूस्थल रेगिस्तान
- उखड़ूँ – पंजे के बल घुटने मोड़ कर बैठना
- खींप – एक प्रकार की घास जिसके रेशों से रस्सी बनती है।
- डगालों – मोटी टहनियाँ, शाखाएँ
- आवक–जावक – आने–जाने की क्रिया
- विभाजन – बंटवारा

अभ्यास प्रश्न–उत्तर

- प्रश्न–1 राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता हैं?

उत्तर– राजस्थान की रजत बूँदे पाठ या लेखक के अनुसार वर्षा जल का संग्रहण करने के लिए राजस्थान में कुंई का निर्माण किया जात है। जब वर्षा अत्यधिम होती हैं, तो वह मरूसनि में रेत की सतह में विलीन जाती है और अहिस्ता–अहिस्त रिसकर कुंई में एकत्रित हो जाती है। कुंई की गहराई सामान्य कुओं के जैसा ही होता है। किन्तु इसके व्यास में अंतर पाया जाता है। सामान्यतः देखा जाए तो सामान्य कुओं का व्यास तकरीबन पन्द्रह से बीस हाथ का होता है जबकि कुंई का व्यास लगभग पांच से छः हाथ का होता है

प्रश्न–2 चेजारो के साथ गाँव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फर्क आया है? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर– चेजारो के साथ गाँव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज बहुत फर्क आया है। यहाँ की परंपरा के अनुसार कुंई का काम पूरा होने के बाद चेलवांजी का विशेष ध्यान रखने के लिए विशेष भोज का आयोजन किया जाता था। उन्हें विदाई के समय तरह–तरह के भेंट दिये जाते थे। गाँव के साथ चेजारों का संबंध यहीं नहीं टूट जाता था, बल्कि समस्त तीज–त्यौहारों, विवाह जैसे मंगल अवसरों पर नेग, भेंट उन्हें दी जाती थी और फसल आने पर खलिहान में उनके नाम से अनाज का एक अलग ढेर भी लगा दिया जाता था। परन्तु अब केवल मजदूरी देकर भी काम करवाने का रिवाज आ गया है।

प्रश्न–3 **राजस्थान के रेत की विशेषता क्या है?**

उत्तर– इस रेत के कण बहुत बारीक होते हैं। ये कण एक दूसरे से चिपकते नहीं। आमतौर पर मिट्टी के कण एक–दूसरे से चिपक जाते हैं। इस चिपकने से मिट्टी में दरारें पड़ जाती हैं। इन दरारों में से भूमि की नमी भाप बनकर उड़ जाती है। रेत में कण अलग–अलग रहते हैं। इस कारण इस रेत में दरारें पड़ती। अंदर की नमी अंदर ही रहती है। यही नमी कुंइयों में पानी का स्त्रोत बनती है।

प्रश्न–4 **चेजारो अपने सिर की रक्षा कैसे करते है?**

उत्तर– चेजारो अपने सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु के बर्तन को टोप की तरह पहन लेते हैं। यह टोप ऊपर से पड़े कंकड़–पत्थर या अन्य वस्तु से उनके सिर की रक्षा करता है।

धन्यवाद